मीठी जगदम्बा माँ की विशेषतायें:- (दादियों के अनुभवों से)

(1) मीठी मम्मा बाबा की हर बात को इतना ध्यान से सुनती जैसे उसी समय एक-एक बात का स्वरूप बनती जा रही है इसलिए मम्मा सदा अचल अडोल, एकरस स्थिति में रही। मम्मा की स्थिति कभी नीचे ऊपर नहीं देखी। पुरुषार्थ भी कोई मेहनत वाला हार्ड नहीं किया। मम्मा के चेहरे से सदा प्युरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। इस प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण ही जगदम्बा के रूप में मम्मा का इतना गायन और पूजन आज तक है।

(2) अटल निश्चय किसको कहा जाता है, वह मम्मा की सूरत से देखा। कभी भी मम्मा ने श्रीमत में अपनी मत मिक्स नहीं की होगी। मेरा विचार यह है, मैं यह समझती हूँ... यह मम्मा ने कभी नहीं कहा। परन्तु बाबा ने यह कहा है, बाबा ने यह समझाया है। वह भी बताने में ऐसा रस जो हर एक को सहज समझ में आ जाए कि बाबा ने किस रहस्य से कहा है।

(3) मम्मा की चलन कभी साधारण नहीं देखी, सदा रॉयल इसलिए मम्मा शिवबाबा की पोत्री, ब्रह्मा बाबा की बेटी बनने से सर्व की मनोकामना पूर्ण करने वाली कामधेनु माँ बन गई। मम्मा ने अपने लिए कोई कामना नहीं रखी। बाप के दिये हुए खजाने से सदा सम्पन्न रही।

(4) मम्मा ने हम बच्चों की पालना करने में इतना सर्वोत्तम श्रेष्ठ पार्ट बजाया, इस कारण गॉडेज ऑफ नॉलेज कहलाई, यह टाइटिल मम्मा के सिवाए किसी को नहीं मिल सकता। शिवबाबा की नॉलेज को इतना धारण किया है तब विद्या की देवी बनी है, इसलिए विद्या धारण करने के लिए सरस्वती को याद करते हैं।

(5) मम्मा को स्वमान, स्वधर्म में रहने का सदा नशा रहा। स्वधर्म हमारा शान्त है, उसमें मम्मा शक्ति अवतार रही। बाबा ने जो कहा मम्मा की बुद्धि ने माना। मम्मा ने कभी नहीं कहा होगा - मैंने यह किया, सदा बाबा के तरफ इशारा किया। मैं बेटी हूँ, मात-पिता वह है, मम्मा इतनी निरंहकारी थी।

(6) मम्मा है ब्रह्मा की बेटी। संबंध में इतनी स्वच्छता, पवित्रता की शक्ति थी जो जगदम्बा बन गई। और साथ-साथ मम्मा को भविष्य का, हम सो का ऐसा नशा था जो नैन चैन से, चेहरे से वह नशा दिखाई देता था जैसे सचमुच श्रीलक्ष्मी है। जैसे वह संस्कारों में भर गया - किसकी हूँ और भविष्य मेरा क्या है!

(7) मम्मा सदा एकान्त में रहती थी, रोज़ 2 बजे सवेरे उठकर बाबा की यादों में एकान्त में चली जाती, इसी पुरुषार्थ से मम्मा का सम्पूर्ण स्वरूप कई बार दिखाई पड़ता था।

(8) मम्मा नम्बरवन आज्ञाकारी रही, मम्मा ने बाबा के हर इशारे को समझा और हम बच्चों को बहुत सरल करके स्पष्ट करके सुनाया। मम्मा के महावाक्यों में एक-एक बात का स्पष्टीकरण है। बाबा के साथ लगन कैसी हो, वह भी मम्मा की सूरत बताती थी।

(9) मम्मा हमेशा कहती थी कि शक्ति जमा करने में आप लोग कितनी मेहनत करते हो और फालतू खर्च कितनी जल्दी कर लेते हो। फालतू बातों में शक्ति खर्च करके फिर उदास, कमजोर हो जाते हो। कमाई करने में इतना टाइम नहीं देते लेकिन सारा दिन खर्चा ही खर्चा, फिर देवाला हो जाता और जब कोई बात सामने आती है तो कहते बहुत मुश्किल है क्योंकि ताकत नहीं है।

(10) मम्मा सदा कहती थी -1- ''हर घड़ी हमारी अन्तिम घड़ी है''। 2- हुक्मी हुक्म चला रहा है। यह दो मन्त्र मम्मा हमेशा याद रखती और सबको याद दिलाती। इसी मन्त्र से हम सहज नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे, किन्हीं झंझटों में नहीं जायेंगे। और अपनी बुद्धि को सब बातों से फ्री रख बाबा की आशाओं को पूर्ण कर सकेंगे।